2. अलंकार

परिभाषा— (1) काव्य की शोभा बढ़ाने वाले साधनों को अलंकार कहते हैं।

(2) जो काव्य को अलंकृत करे, वह अलंकार है। अलंकार का शाब्दिक अर्थ है, आभूषण। जिन गुण धर्मों के द्वारा काव्य सौन्दर्य में वृद्धि होती है, उसे अलंकार कहते हैं।

अलंकार के प्रकार (भेद)— अलंकार के तीन भेद होते हैं—

1. शब्दालंकार— जहाँ शब्द-चयन द्वारा कथन में सौन्दर्य आता है, वहाँ शब्दालंकार होता है।

उदाहरण— चंचल चारु चितौनि चितै,
चित्र चोरति चौंगनो चाह भरी।

इस उदाहरण में 'च' की आवृत्ति होने के कारण सौन्दर्य बढ़ रहा है। यदि इन 'च' वाले शब्दों के स्थान पर उनके पर्यायवाची शब्द रख दिए जाएँ तो सौन्दर्य नहीं रहेगा। अनुप्रास, यमक, श्लेष, वक्रोक्ति आदि शब्दालंकार के भेद हैं।

2. अर्थालंकार— जहाँ कथन में अर्थगत सौन्दर्य होता है, उसे अर्थालंकार कहते हैं अर्थात् काव्य के अर्थ और भाव को चमत्कारपूर्ण बनाने वाले अलंकार, अर्थालंकार कहलाते हैं।

उदाहरण— "सुमनों की मुस्कान, तुम्हारी।" इसमें सुमनों के स्थान पर फूलों या पुष्पों को रख देने से अलंकार और अर्थगत सौन्दर्य में कोई अन्तर नहीं पड़ता।

3. उभयालंकार— जहाँ कथन में शब्दगत और अर्थगत दोनों ही प्रकार का चमत्कार और सौन्दर्य हो, वहाँ उभयालंकार होता है।

उदाहरण—अंगुरी अवरान के बीच दिये,
सखियन सो बात बनावत देखौ।
पूरब-पुण्य जगैं जबही,
युग लोचन-चाप चढ़ावत देखौ॥

यहाँ अनुप्रास शब्दालंकार और रूपक अर्थालंकार है।

1. उपमा अलंकार

उपमा का अर्थ होता है—एक वस्तु का किसी दूसरी वस्तु से समानता के आधार पर तुलना करना। जहाँ किसी वस्तु की उसके किसी विशेष गुण या स्वभाव की विशेषता के आधार पर तुलना की जाती है, वहाँ उपमा अलंकार होता है। जैसे—

उदाहरण 1. "पीपर पात सरिस मन डोला।" (पीपल के पत्ते के समान मन डोलने लगा।)

उदाहरण 2. सीता का मुख चन्द्रमा के समान सुन्दर है।

उपमा अलंकार के प्रकार (भेद)— उपमा के मुख्यत: 2 भेद हैं—

(1) पूर्णोपमा अलंकार, (2) लुप्तोपमा अलंकार।

2. मानवीकरण

छायावादी कविता में कवि प्रकृति प्रेम को अभिव्यक्त करने के लिए प्रकृति का मानवीकरण करते हैं। 'मानवीकरण' छायावादी काव्य की प्रमुख विशेषता है। इसका अर्थ होता है—प्रकृति की हर वस्तु में मनुष्य की छाया देखना।

Scanned with CamScanner

उदाहरण 1. मेखलाकार पर्वत अपार,
अपने सहस्र दृग-सुमन फाड़
अवलोक रहा है बार-बार,
नीचे जल में निज महाकार,
जिसके चरणों में पला ताल,
दर्पण-सा फैला है विशाल।

यहाँ पर्वत को मनुष्य, फूल को आँखें तथा तालाब को दर्पण माना गया है। कवि के अनुसार, पर्वत रूपी मानव हजारों फूल रूपी नेत्रों से, उस तालाब रूपी दर्पण में अपनी परछाई को बार-बार देख रहा है।

यहाँ छायावादी काव्य की 'मानवीकरण' विषयक विशेषता अवलोकनीय है। कवि प्रकृति की वस्तुओं में (पर्वत, फूल, तालाब) मनुष्य की छाया देख रहा है।

3. भ्रांतिमान अलंकार

जहाँ प्रस्तुत वस्तु को देखकर किसी विशेष समानता के कारण किसी दूसरी वस्तु का भ्रम हो जाये, वहाँ भ्राँति मान अलंकार होता है जैसे—

उदाहरण—1. जान श्याम धनश्याम को, नाच उठे वनमोर
2. चन्द के भरम होत, मोद है कुमोदिनी को।
3. कपिकर हृदय विचार, दीन्ह मुद्रिका डारि तब।
जनु अशोक अंगार, दीन्ह हरषि उठि कर गहउ।
4. चाहत चकोर सूर ओर, दृग छोर करि।
चकवा की छाती तजि धीर धसकति है।

4. सन्देह अलंकार

जहाँ रूप रंग और गुण की समानता के कारण किसी वस्तु को देखकर यह निश्चय न हो कि वह वही वस्तु है, वहाँ सन्देह अलंकार होता है। इसमें अन्त तक यह संशय बना रहता है।

उदाहरण—1. सारी बीच नारी है कि नारी बीच सारी है।
कि सारी ही की नारी है कि नारी ही की सारी है।
2. दिग्दाहों से धूम उठे या जल धर उठे क्षितिज तटके।

अन्तर— भ्राँतिमान में एक वस्तु में दूसरी वस्तु का झूठा निश्चय हो जाता है जबकि संदेह में अनिश्चय बना रहता है कि ये है कि नहीं ? तर्क-वितर्क की भावना बनी रहती है। भ्रांतिमान में हम स्वयं भ्रम दूर नहीं कर पाते, जबकि संदेह में कर लेते हैं।

5. विरोधाभास अलंकार

जहाँ किसी पदार्थ, गुण या क्रिया में वास्तविक विरोध न होते हुए भी विरोध का आभास हो, वहाँ पर विरोधाभास अलंकार होता है। **उदाहरण—**

1. वा मुख की मधुराई कहा कहौं
मीठी लगे अखियान लुनाई।
2. तंत्री-नाद, कवित रस, सरस राग रति रंग
अन बूड़े तिरे जे बूड़े सब अंग।।
3. या अनुरागी चित्त की गति समझे नहि कोय
ज्यों-ज्यों बूढ़े श्याम रंग, त्यों-त्यों उज्ज्वल होय।।
4. नीर भरी अँखियाँ रहे तऊ न प्यास बुझाय।

Scanned with CamScanner